श्रीकृष्ण जुबली लॉ कॉलेज, मुजफ्फरपुर द्वारा आयोजित कार्यक्रम में
महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन

(दिनांक–18.03.2017, समय–अपराह्न–12:30 बजे, स्थान–मुजफ्फरपुर)

आज के इस कार्यक्रम में उपस्थित पूर्व मंत्री श्री ललितेश्वर प्रसाद शाही जी, बी॰आर॰ए॰ बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के कुलपति डॉ॰ अमरेन्द्र नारायण यादव जी, 'इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस' के अध्यक्ष प्रो॰ भोजनन्दन प्रसाद सिंह जी, महाविद्यालय की सचिव डॉ॰ श्रीमती उज्ज्वला मिश्रा जी, प्राचार्य प्रो॰ जयंत कुमार जी, कार्यक्रम में उपस्थित विद्वद्जन, आगत अतिथिगण, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

आज की अपनी मुजफ्फरपुर यात्रा के दौरान मुझे आपके बीच आने का सौभाग्य मिला। आपतक पहुँचने में शाही जी माध्यम बने, अतः मैं विशेष रूप से उनको धन्यवाद देता हूँ। सभा–मंच पर आने के पूर्व मैंने आपके महाविद्यालय का भ्रमण किया एवं इसके समृद्ध पुस्तकालय को भी देखा। मैंने स्व॰ डॉ॰ एस॰के॰ सिंह जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर अपना नमन भी निवेदित किया। अपने प्रथम परिदर्शन में ही मुझे लगा कि यह संस्था एक ऐसी शिक्षण संस्था है, जो पठन–पाठन पर पूरी तरह ध्यान केन्द्रित रखती है तथा युगीन आवश्यकताओं के अनुरूप अपने को हर तरह से विकसित करने के लिए प्रयासरत है।

मित्रों, किसी भी शिक्षण–संस्था के विकास के लिए दो चीजें बहुत जरूरी होती हैं–पहली वहाँ की बेहतर और समृद्ध आधारभूत संरचना और दूसरी वहाँ के अनुशासित और शिक्षाप्रेमी छात्रों एवं शिक्षकों की दृढ़निश्चयता। आपके बीच आकर मुझे लगा कि आप इन दोनों ही दृष्टियों से अपनी संस्था के विकास के प्रति पूर्ण तत्पर और सजग हैं। आदरणीय शाही जी का मार्ग–दर्शन भी आपको प्राप्त है। इसलिए मुझे पूरा भरोसा है कि

आपकी संस्था निरन्तर प्रगति–पथ पर तेजी से अग्रसर होती रहेगी।

आज की इस सभा के माध्यम से आपने स्वतंत्रता–संग्राम के योद्धाओं के भी पुण्य–स्मरण का जो निर्णय लिया है, वह सचमुच प्रशंसनीय है। आज हम उस दौर से गुजर रहे हैं, जब पुरानी पीढ़ी के वे लोग, जिन्होंने स्वतंत्रता–आंदोलन में भाग लिया या फिर जिन्होंने उस आन्दोलन को आँखों देखा है, धीरे–धीरे हमसे जुदा होते जा रहे हैं। दूसरी ओर, वह पीढ़ी भारतीय राजनीति में नेतृत्वकारी भूमिका में उभर चुकी है, जिसने भारतीय स्वतंत्रता–संग्राम में भाग तो नहीं लिया है, किन्तु आजादी के किस्सों को अपने पूर्वजों के मुख से अवश्य सुना है। ऐसे समय में यह जरूरी है कि हम सम्मेलनों, सेमिनारों, गोष्ठियों आदि के माध्यम से स्वतंत्रता–संग्राम के महान शहीदों, क्रांतिकारियों आदि की संघर्ष–कथा को तथा स्वतंत्रता–संग्राम के विभिन्न प्रसंगों को नई युवा पीढ़ी के बीच प्रस्तुत करें। आज का आपका यह कार्यक्रम इस दिशा में एक सार्थक प्रयत्न माना जायेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

स्वतंत्रता–आन्दोलन की लड़ाई हमने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के नेतृत्व में लड़ी। उनके साथ सत्य और अहिंसा के बल–बूते हमने आजादी हासिल की–यह एक सच्चाई है। परन्तु अन्य कई ऐसे योद्धा रहे, जिन्होंने अपनी प्राणाहूति दी और आजादी के लिए कठिन यंत्रणाएँ सहीं। इस संदर्भ में बिहार के बाबू वीर कुँवर सिंह की कुर्बानी के साथ–साथ, उनके साथ शहीद हुए उनके अनेकानेक सहयोगियों तथा उनसे प्रेरित क्रांतिकारी सेनानियों के प्रति अपना श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हुए, हमें गौरव का बोध हो रहा है। हम मुजफ्फरपुर की पावन धरती पर स्थापित एस॰के॰जे॰ लॉ॰ कॉलेज के प्रांगण से स्वतंत्रता–सेनानियों की कुर्बानियों को याद कर रहे हैं।

मैं ग्रामीण क्षेत्रों –खासकर बडका गाँव के उन स्वतंत्रता–सेनानियों के प्रति श्रद्धा–सुमन अर्पित करता हूँ,

जिन्होंने ब्रिटीश शोषण के खिलाफ आवाज बुलंद कर राष्ट्रीय जन–चेतना में प्राण भरने का काम किया। हमें आज याद आती है 'चम्पारण सत्याग्रह' की, जो भारत की पावन धरती पर गाँधीजी का प्रथम सत्याग्रह आंदोलन था। इसमें मुजफ्फरपुर के शिक्षकों, छात्रों, वकील समुदाय तथा चम्पारण के ग्रामीण किसानों ने अपनी अहम भूमिका निभायी। इस आंदोलन में राजकुमार शुक्ल, बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद, बाबू रामनवमी प्रसाद, बाबू धरनीधर, देशरत्न डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद, श्री मजहरूल हक आदि की अग्रणी भूमिका रही।

इस आंदोलन में सबसे पहले एक विशेष रणनीति के तहत, गाँधीजी ने छात्रों का आह्वान किया और इतिहास गवाह है कि छात्रों ने अप्रत्याशित ढंग से इस आंदोलन में अपनी कुर्बानियाँ दी। मुजफ्फरपुर के बी॰बी॰ कॉलेजिस्ट स्कूल तथा जी॰ बी॰बी॰ कॉलेज (वर्तमान लंगट सिंह महाविद्यालय) के शिक्षकों एवं छात्रों ने अप्रतिम कुर्बानियों का उदाहरण पेश किया। भारत की आजादी के लिए जिन स्वतंत्रता– सेनानियों ने 1857 से लेकर 1947 तक अपने तन–मन–धन की जो कुर्बानियाँ दी हैं, उनमें गाँधीजी एवं भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की चिंतनधारा से पृथक्, हमारे क्रांतिकारी शहीदों की कुर्बानियाँ भी शामिल हैं। इनमें अमर शहीद खुदीराम बोस एवं प्रफुल्ल चाकी तो मुजफ्फरपुर के इतिहास के गौरवशाली अध्याय हैं ही, मुजफ्फरपुर की धरती ने बैंकुठ शुक्ल तथा उन जैसे अनेक वीर सपूतों को जन्म दिया, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपने प्राणों को उत्सर्ग किया। फिर अमर शहीद भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राम प्रसाद विस्मिल जैसे अनेकानेक अमर शहीदों को याद कर आज हम गौरवान्ति हो रहे हैं। इन सबों की कुर्बानियों के फलस्वरूप ही आज हम एक 'सम्प्रभुता–सम्पन्न लोकतांत्रिक गणराज्य' के स्वतंत्र नागरिक हैं। इस वर्ष बिहार सरकार एवं केन्द्र सरकार राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के 'चम्पारण आन्दोलन' का शताब्दी–वर्ष आयोजित कर रही है। ऐसे में, इस आयोजन की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है।

मुझे विश्वास है, इस आयोजन के माध्यम से हम स्वतंत्रता–संग्राम के अपने गौरवमय इतिहास का सादर स्मरण करते हुए अपने स्वर्णिम भविष्य के नव–निर्माण के लिए भी प्रेरित होंगे। आप सबको ऐसे सार्थक आयोजन के लिए मैं बहुत–बहुत बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ।

जय हिन्द !!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।